# 2

# तत्पुरुष समास
# ''द्वितीयादि तत्पुरुष समास''

अव्ययीभाव समास से पर तत्पुरुष उपस्थित होता है। (आता है।) (किया जाता है) ''तत्पुरुषः'' इसको अधिकृत करके यह समास (तत्पुरुष) प्रवृत्त होता है। प्रायेण उत्तरपद प्रधान होता है वह यही (तत्पुरुष) समास है। उत्तर पद का अर्थ उत्तरपदार्थ। उत्तरपदार्थ प्रधान है जिसमें वह उत्तरपदार्थप्रधान। जैसेः राज्ञः पुरुषः इस विग्रह में राजपुरुष है। यहाँ समासिक दोनों पदों के उत्तर पद का पुरुष पद का अर्थ ही प्रधान है। जिस प्रकार राजपुरुषम् आनय (राजपुरुष को लाओ) ऐसा कहने पर पुरुष रूप अर्थ का आनयम् (बुलाना) इण्ट न ही है राजन् पद का अर्थ राज्ञः। और सामान्यतः उत्तरपदार्थ प्राधान्य को तत्पुरुष समास में दिखाई देता है।

यह तत्पुरुषसमास समानाधिकरण और व्यधिकरण दो विधियों में विभक्त (प्रकार) बोल सकते हैं। समान अधिकरण जिन दोनों में वे पद पद सयानाधिकरण कहा जाता है। समान विभक्ति के कौन से पद हैं। समान अधिकरण में ये दो है समानाधिकरण अर्थ आदि होने से अच् प्रत्यय होता है। और व्यधिकरण नाम असमान विभक्ति होने का है। व्याधिकरण में है जिसका है व्यधिकरण यह अर्श आदि अच् प्रत्यय होता है। अर्थात् जिस पुरुष में समस्यमान पदों की समान विभक्तियाँ नहीं होती है। इस पाठ में आदि में तत्पुरुष अधिकार का वर्णन है। इसके बाद विशेष प्रयोजन साधन के लिए द्विगु समास की तत्पुरुष संज्ञा का वर्णन किया गया या तत्पुरुष संज्ञा वर्णित है। इसके बाद व्यधिकरण तत्पुरुष समास विधायकों सूत्रों द्वितीयाश्रितातीत ... इन सूत्रों की यहाँ आलोचना होती है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- तत्पुरुष अधिकार की सीमा जान पाने में;
- द्विगु की तत्पुरुष संज्ञा को जान पाने में;
- व्यधिकरण तत्पुरुष विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- षष्ठी समास निषेध सूत्रों को जान पाने में।

## 2.1 ''तत्पुरुषः''

**सूत्रार्थ**–''शेषो बहुव्रीहि'' इस सूत्र पर्यन्त तत्पुरुष अधिकार है।

**सूत्रव्याख्या**–यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास अधिकार का विधान होता है। इस सूत्र में तत्पुरुषः यह पद प्रथमा एकवचनान्त है। ''प्राक्कडारात्समासः'' अधिकृत किया गया है यहाँ। तत्पुरुष समास के अधिकार का इस सूत्र से विधान होता है। अथम् अधिकारः ''शेषोबहुव्रीहिः'' इस सूत्र से प्राव-पर्यन्त है। एवं तत्पुरुष इस सूत्र से ''शेषो बहुव्रीहिः'' इससे पहले सूत्रों से जो समास होता है वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

## ( 2.2 ) ''द्विगुश्च''

**सूत्रार्थ**–द्विगु भी तत्पुरुष संज्ञक होता है।

**सूत्रव्याख्या**–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से द्विगुसमास की तत्पुरुष संज्ञा होती है। इस सूत्र में द्विगु इस पद प्रथमा एकवचनान्त है और अव्ययपद है। ''तत्पुरुषः'' ऐसा पूर्व सूत्र से अधिकृत किया गया है। तत्पुरुषः इस संज्ञापद को द्विगु इस संज्ञिपद है। और सूत्रार्थ होता है–''द्विगु भी तत्पुरुष संज्ञक होता है।

इससे आगे ''तद्वितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इस सूत्र से तत्पुरुष अधिकार होने से त्रयसमास का विधान हुआ। तीनों समासो में जिस समास में पूर्वपदसंज्ञावाचक होता है उस समास की ''संख्यापूर्वो द्विगुः'' इस सूत्र से द्विगु संज्ञा का विधान होता है। ''आकडारादेका संज्ञा'' इस एक संज्ञा अधिकार से अन्य प्रकार से द्विगु तत्पुरुष का बाधक होता है। परन्तु द्विगु की तत्पुरुष संज्ञा अभीष्ट होती है अतः विशेषण सूत्र से तत्पुरुषसंज्ञा का विधान किया गया है। पाँच राजाओं का समाहार (पञ्चानां राजानां समाहार) इस विग्रह में पञ्चराजन् यहाँ तत्पुरुषसमासान्त का ''राजाहः सखिभ्यष्टच्'' इससे टच की प्रवृत्ति होती है। इससे बाद प्रक्रिया कार्य में पञ्चराजम्' शब्द निष्पन्न होता है।

## ( 2.3 ) ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः''

**सूत्रार्थ**–द्वितीयान्त सुबन्त को श्रित आदि प्रकृति के सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष सामस संज्ञा होती है।

**सूत्रव्याख्या**–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से द्वितीया तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में द्वितीया इस प्रथमा एक वचनान्त ''श्रितातीतपतिगतात्यस्तप्राप्तापचैः'' यह तृतीया बहुवचनान्त पद है। अतीतश्च पतितश्च गतश्च अल्यस्तश्चनाप्राप्तस्य आपन्नश्च श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नाः उनके द्वारा इतरेतरयोगद्वन्दसमास हैं। ''यह सुपा'' इस सू से सुपा की अनुवृत्ति होती है। और उसका --श्रितातीत पतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' इसके विशेषण से वचन परिणाम से तदन्तविधि में सुबन्त के द्वारा समाज प्राप्त होता है। यहाँ शंका (प्रश्न) उत्पन्न होती है कि श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः इसका और सुबन्तों के द्वारा किस प्रकार समानाधिकरण होता है? क्योंकि श्रित आदि सुबन्त्व नहीं है। और जिनके सुबन्तत्व नहीं होता है उनका श्रितादित्व नहीं होता है। अतः श्रित आदि शब्दों के उसकी प्रकृति (स्वभाव) के लक्षण हैं। अर्थात् श्रित आदि प्रकृति का जिनके वे सब श्रित आदि प्रकृतिक यहाँ श्रित आदि पदों से ग्रहण किये गये हैं। श्रितादि सुबन्तों के द्वारा श्रितादिप्रकृति के द्वारा सुबन्त आदि का समास होता है यही सूत्र का अर्थ है। ''प्राक्कडारात्समासः''' ''सहसुपा'' ''तत्पुरुषः'' ''विभाषा'' ये चार प्रकार के सूत्र अधिकृत किये गये हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। इस तदन्त विधि में सुबन्त। सुबन्त के विशेषण से द्वितीया इसका तदन्तविधि में द्वितीयान्त सुबन्त को तत्पुरुष समास होता है। और सूत्रार्थ आता है–''द्वितीयान्त सुबन्त को श्रितादि प्राकृतिकों द्वारा सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

यहाँ द्वितीयात्त को समर्थ से सुबन्त से समास होता है। और वह समास है तत्पुरुषसमास। अतः यह समास द्वितीयातत्पुरुष समास कहा जाता है।

**उदाहरणम्**–इस सूत्र का अर्थ है ''कृष्णश्रितः''। कृष्णं श्रितः इस लौकिक विग्रह में कृष्ण अम् श्रित सु इस अलौकिक विग्रह में प्रस्तुतसूत्र से द्वितीयान्त कृष्ण अम् इस सुबन्त को श्रित सु इस श्रितप्रकृतिक से सुबन्त के साथ तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद समासविद्यायकसूत्र में द्वितीया इसका प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसके बोध्य का **कृष्ण अम्** इसका ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इससे उपसर्जन संज्ञा होने पर ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व निपात होने पर **कृष्ण अम् श्रित सु** होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इससे समास की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपो धातुप्रातिपदिकथोः'' इस सूत्र से प्रातिपदिक अव्यय का सुप् का अय् आदेश एवं सु प्रत्यय का लोप होने पर कृष्णश्रित होता है। ''एकदेशविकृतमनन्थवत्'' इस न्याय से कृष्णश्रित शब्द के प्रातिपदिक आक्षय से इसके बाद ''प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय होने पर कृष्ण+यु स्थिति होती है। सु के उकार का ''उपदेशेजनुनासिक इत्'' इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' इससे लोप (उकार का) होने पर कृष्णश्रित स् होता है। इसके बाद ''सुप्तिङन्तं पदम्'' इससे समुदाय की पद संज्ञा होने पर ''समश्रुषोक्तः'' इससे सकार का रुकार होने ''खखसानयोर्विसर्जनीयः'' इस सूत्र से पदान्त के रकार का विसर्ग आदेश होने पर ''कृष्णश्रितः'' रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार दु:खम् अतीत: दु:खातीत: नरकं पतित: नरकपतित: ग्राम गत: ग्रामगत:, ग्रामं अस्त्यस्त: ग्रामाम्त्यस्त:, यामं प्राप्त: ग्राम प्राप्त: संशयम् आपन्न: संशयापन्न: आदि इस सूत्र के उदाहरण है।

## पाठगत प्रश्न-1

1. ''तत्पुरुष:'' इसका अधिकार कहाँ तक (कितने सूत्रों तक) है?
2. ''द्विगुश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
3. द्विगुसमास का तत्पुरुष संज्ञा विज्ञान में क्या प्रयोजन है?
4. ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:'' सूत्र का क्या अर्थ है?
5. ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:'' सूत्र का क्या अर्थ है?
6. ''श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:'' यहाँ कौन सा समास है और कौन सा विग्रह है?
7. श्रितादि शब्दों की लक्षण किसमें है?
8. ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:'' इस सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये।

## (2.8) ''तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन''

**सूत्रार्थ**–तृतीयान्त सुबन्त को तृतीयान्त विभक्ति अर्थ में गुण, वचन और अर्थ शब्द के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

सूत्र का अवतरण:–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

**सूत्रव्याख्या**–इस सूत्र में तृतीया तत्कृत अर्थेन गुणवचनेन यही पदच्छेद है। तृतीया यह प्रथमाविभक्ति एकवचनान्तपद है। तत्कृत यह लुप्ततृतीयान्त पद है। अर्थेन गुणवचनेन ये दो पद तृतीया एकवचनान्त हैं। ''प्राक्कडारात्समास:'' ''तत्पुरुष:'' ''विभाषा'' ये तीन सूत्र अधिकार सूत्र है। ''सुवामन्निते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृति हुई है। सुप् का तदत्त विधि में युबन्तम् होता है। सुबन्त का विशेषण होने से तृतीया का तदन्त विधि में तृतीयान्तम् पद प्राप्त होता है।

''छन्दोवत्सूत्राणि भवन्ति'' इस भाष्यवचन से ''सुपां सुलुक'' इस सूत्र से तृतीया एकवचन का लोप होने पर **तत्कृत** रूप प्राप्त हुआ। तत्कृतेनत्यर्थ (उसके लिए यह अर्थ होता है)। तेन कृतं तकृतम्, तेन इति उससे तृतीयातत्पुरुष समास हुआ। तत्कृतपद का तृतीयान्त अर्थक किया हुआ अर्थ प्राप्त हुआ। गुणमुक्तवान इस विग्रह में ''कृत्यल्युटोबहुलम्'' यहाँ बहुल ग्रहण से कर्तृअर्थ में भूतकाल में ल्युट् प्रत्यय होने पर गुणवचनशब्द निष्पन्न होता है। जो शब्द पूर्व गुणवाचक थे

अब द्रव्यवाचक वे ही गुणवचनशब्द से गृहित होते हैं। जैसे श्वेतशब्द का गुणवाचक गुण और गुणिन (गुणयों) के मध्य उपचार से श्वेतगुणविशिष्ट पदार्थ का अर्थ स्वीकार किया है। अथवा उससे मत्रुप् प्रत्यय होने पर ''गुणवचनेभ्यो मतुपो लुगिष्टः'' इस वार्तिक से मतुप् प्रत्यय का लोप होने पर श्वेतशब्द का श्वेत-गुणविशिष्ट पद की वाचकता प्राप्त हुई है। और श्वेत शब्द गुणवचन है। तत्कृत का गुणवचन से यहाँ अन्वय हुआ है। एवम् यहां अर्थ हैं तृतीयान्तार्थकृतेन गुणवचनेन (तृतीयान्तर्थक कृत गुण वचन से) अर्थ से इसका अर्थ प्रकृति से सुबन्त से यही अर्थ हैं। इस सूत्र का अर्थ है'' तृतीयान्त सुबन्त को तृतीयान्तर्थकृत गुणवचन और अर्थशब्द के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

यहाँ तृतीयान्त के समान अर्थ से सुबन्त से समास होता है। और वह तत्पुरुष समास है। अतः यह समास तृतीयातत्पुरुषसमास कहा जाता है।

**उदाहरण**–तृतीयान्त का तृतीयान्तार्थ गुण और वचन के साथ समास में इस सूत्र का उदाहरण है शङ्कुलाखण्डः है। यहाँ खण्डशब्द खण्डगुणबोधक होकर खण्डनगुणविशिष्ट के अंश का बोधक है। शङ्कुलया खण्डः इस लौकिक विग्रह में शङ्कुला टा खण्ड सु यह अलौकिक विग्रह होने पर प्रस्तुत सूत्र से तृतीयान्त शङ्कुला टा यह सुबन्तखण्ड सु ऐसा तृतीयान्त अर्थ गुणवचन से सुबन्त के साथ तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद समास विधायक सूत्र में तृतीया के प्रथमाविभक्ति निर्दिष्ट होने पर उसके बोध का शङ्कुला टा इसकी उपसर्जनसंज्ञा होने पर पूर्वनिपात में शङ्कुला टा खण्ड सु होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिक होने पर प्रातिपदिक अवयव का सुबन्त का टा प्रत्यय क और सु का लोप होने पर शङ्कुलाखण्ड शब्द निष्पन्न होता है। उसका प्रातिपदिक होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय होने पर खङ्कुलाखण्डः रूप सिद्ध होता है।

अर्थ प्रकृति से सुबन्त के साथ तृतीयान्त का समास में उदाहरण होता है। धान्येन अर्थः धान्यार्थः (धान्य से अर्थ यह धान्यार्थ है)

## 2.5 ''कर्तृकरणेकृता बहुलम्''

**सूत्रार्थ**–कर्ता और करण में विद्यमान तृतीयान्त सुबन्त को कृदन्त के साथ बहुल तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

**सूत्र व्याख्या**–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से तृतीय तत्पुरुष समास होता है। तीन पदात्मक इस सूत्र में **कर्तृकरणे** में सप्तमी एकवचनान्त, कृता यह तृतीया एकवचनान्त बहुल यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। तृतीया तत्कृत अर्थ से गुण और वचन से इस सूत्र से तृतीया इस प्रथमान्त की अनुवृत्ति होती है। ''प्राक्कडारात्समासः'' ''तत्पुरुषः'' ''विभाषा'', ये तीनों अधिकृत सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रितेपराङ्गवत्सरे'' इससे सुप् की अनुवृति होती है। सुप् का तदन्तविधि में सुबन्तम् होता है। कर्ता और करण यही कर्तृकरणम् तस्मिन् (उसमें) कर्तृकरणे में समाहार द्वन्द है। तृतीया का सुबन्त का विशेषण से तदन्तविधि में तृतीयान्त सुबन्त प्राप्त होता है। कतृकरणे इसका तृतीयान्त सुबन्त की इससे अन्वय होता है। उससे कर्ता और करण में विद्यमान तृतीयान्त सुबन्तः को समास होता है यही अर्थ है। सुपा यहाँ पर तदन्त विधि में सुबन्तेय रूप होता है।

टिप्पणियाँ



सुबन्तेन इसके विशेषण से कृता पद इसका तदन्तविधि में कृदन्त से सुबन्तेन (सुबन्त से) प्राप्त होता है। कृदन्त का सुबन्त के अभाव से कृदन्तशब्द से कृदन्त प्रकृति का ग्रहण किया गया है। और कृदन्त प्रकृति से सुबन्तेन (सुबन्त से) यही तात्पर्य है। ''कर्तरि करणे च'' विद्यमान तृतीयान्त सुबन्त को कृदन्त के साथ बहुल तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। यही सूत्रार्थ है।

सूत्र में बहुलग्रहण किया गया है। बहुल शब्द का अर्थ है–विधि विधान का बहुत प्रसार से समीक्षा करके ''कहीं प्रवृति से, कहीं अप्रवृत्ति से कहीं अन्य से ही, कहीं विकल्प से, इस प्रकार चार प्रकार का बाहुलक कहे जाते हैं।

अत: कर्ता में और करण में तृतीया का कहीं समास नहीं होता है। कहीं पर विभक्ति के अन्तर में भी समास होता है।

''कृद्ग्रहण में गतिकारक पूर्व पद का भी ग्रहण किया गया है।'' यही परिभाषा का इस सूत्र में उपयोग है।'' कृदन्त के ग्रहण में गतिपूर्व के कारक पूर्व का भी ग्रहण होता है'' यही परिभाषा का अर्थ है। सूत्र में कृता इससे कृदन्त ग्रहण से यहाँ प्रसङ्ग से गति पूर्व का भी कृदन्त का भी ग्रहण होता है।

**उदाहरण**–कर्ता में तृतीयान्त का कृदन्त से समास का उदाहरण है हरित्रात:। त्रातशब्द कृदन्त है और हरि यहाँ तृतीयान्त कर्ता है। हरिणा त्रात: इस लौकिक विग्रह में हरि टा त्रात सु इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से कर्ता में विद्यमान हरि टा इस सुबन्त को त्रात सु सुबन्त के साथ तत्पुरुषसंज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न हरिशब्द से प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय होने हरित्रात: रूप सिद्ध होता है। करण में समारा का उदाहरण है नखैभिन्न: नखभिन्न। भेदन क्रिया में नख (नाखून) करण और भिन्नशब्द कृदन्त है।

बहुल ग्रहण से समास अभाव का उदाहरण जैसे: दात्रेण, लुनवान इत्यादि है। विभक्ति के अन्तर को समास होता है जैसे: पादसारक छिपते इति हारक: बहुलक से कर्म से ण्वुल् प्रत्यय है। पादाभ्याम् से अपादानपञ्चम्यन्त का समास होता है।

गतिपूर्वक के ग्रहण में नखनिर्भिध: उदाहरण है। यहाँ निर्भिन्न: यहाँ पर निर् गतिसंज्ञक है। और निर्भिन्न: इस गतिपूर्वक कृदन्त के साथ नखै: इस करण में तृतीयान्त वार्तिक सहायता से प्रस्तुत सूत्र से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। उससे नखनिर्भिव: रूप सिद्ध होती है।

## पाठगत प्रश्न-2

9. ''तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' इस सूत्र का क्या अर्थ है।

10. तत्कृत इसका क्या अर्थ है?

11. गुणवचनपद से किसका ग्रहण किया गया है?

12. ''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये?

13. ''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

14. बहुल ग्रहण का क्या फल है?

15. ''कृद्ग्रहणे गतिकारक पूर्वपदस्यापि ग्रहणम्'' इस परिभाषा अर्थ क्या है?

16. ''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' इस सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये?

## ( 2.6 ) ''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुख रक्षितैः'' ( 2.1.36 )

**सूत्रार्थ**–चतुर्थ्यन्त अर्थ के लिए जो तद् वाची अर्थबलिहित सुख रक्षा के साथ चतुर्थ्यन्त सुबन्त को विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

**सूत्र व्याख्या**–पाणिनी सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से चतुर्थी तत्पुरुष समास होता है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। यहाँ चतुर्थी प्रथमा एकवचनान्त तथा तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षित शब्दों द्वारा तृतीया बहुवचनान्त पद है। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुष ऐसे पद पहले से अधिकृत हैं। और तदर्थश्च, अर्थश्च बलिश्च हितश्च सुखश्च रक्षितश्च **तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितानि** तैः तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः यही इतरेतरद्वन्द हैं। ''प्राक्कडारात्समासः'' ''तत्पुरुषः'' ''विभाषा'' ये तीन अधिकृत सूत्र हैं। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्रासाः'' इस परिभाषा से यहाँ चतुर्थी विभक्ति तदन्त विधि में चतुर्थ्यन्त **सुबन्तम्** पद होता है।

सूत्र में उसके अंश से चतुर्थ्यन्त दिखाई देता है। उससे तदर्थ इस उक्ति में चतुर्थ्यन्त अर्थ जाता है। और कुछ चतुर्थ्यन्त के शब्दस्वरूप से उससे किसी वस्तु का परामर्श अभाव से लक्षणा से चतुर्थ्यन्तेन कहना चाहिए उससे ग्रहण किया जाना चाहिए। उससे ''चतुर्थ्यन्तवाच्य को उस तद्वाची और अर्थादि सुबन्तों के द्वारा और सुबन्त को विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है यही अर्थ प्राप्त होता है।

यहाँ चतुर्थ्यन्त को समर्थ से सुबन्त के साथ समास होता है। और वह तत्पुरुषसमास होता है। अतः यह समास चतुर्थी तत्पुरुष कहा जाता है।

इस सूत्र के व्याख्यान अवसर पर ''अर्थेन नित्यसमासो विशेष्य लिङ्गता चेति वक्तत्यम्'' यह वार्तिक प्रक्र्तत होता है।'' अर्थशब्द से चतुर्थ्यन्त का नित्यसमास और समास में विशेष्यलिङ्गता होती है। यही वार्तिक का अर्थ है। इस वार्तिक से अर्थ शब्द से चतुर्थी अन्त गले पद को नित्य समास होता है अन्यथा विभाषा अधिकार से अर्थ से समास में विकल्प की आपत्ति होनी चाहिए। यहाँ यह भी ज्ञान होना चाहिए जिस अर्थ से समस्यमान शब्दस्वरूप के विशेषणात्मक प्रधानीभूत की विशेष्यलिङ्कता होनी चाहिए। अन्यथा अर्थशब्द की नित्य पुंसकता से ''परवल्लिङ्गं द्वन्द तत्पुरुषयोः'' इससे सभी जगह पुंसत्व होनी चाहिए।

**उदाहरण**–तदर्थ का उदाहरण है ''यूपदारु''। यूपाय दारु इस लौकिक विग्रह में यूप ङे दारु सु इस अलौकिक विग्रह में प्रस्तुत सूत्र से चतुर्थ्यन्त यूप ङे इस सुबन्त को दारु सु इस तदर्थ से सुबन्त के साथ तत्पुरुषसमाससंज्ञा होती है। इसके बाद समास विधायक सूत्र में चतुर्थी विभक्ति के प्रथमा विभक्ति के निदिष्ट होने से उरा बोध्य के यूप ङे इसकी उपसर्जन होने पर पूर्व नियात में यूप ङे दारु सु होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व से प्रातिपदिक अवयव

टिप्पणियाँ



का सुबन्त के ङे प्रत्यय का और सु प्रत्यय का लोप होने पर यूपदारु शब्द निष्पन्न होता है। उसके प्रातिपदिकत्व से प्रथमा विभक्ति की एकवचन विवक्षा में सुप्रत्यय होने पर यूपदारु रूप सिद्ध होती है।

क्या रन्धनाथ स्थाली यहाँ पर भी तदर्थसत्व होने से उससे चतुर्थान्त का सुबन्त समास होना चाहिए? यह शंका (प्रश्न) पैदा होती है। इसका समाधान बताया गया है कि सूत्र में तदर्थशब्द से जहाँ प्रकृति विकृति भाव हो वहीं पर ही समास की प्रसक्ति होती हैं दूसरी जगह नहीं।

अर्थशब्द के साथ समास में तावत् द्विजायायं द्विजार्थः सुपः, द्विजार्था यवागूः द्विजार्थं पथः आदि इसके उदाहरण है। उसी प्रकार भूतबलि, गोहितम्, गोमुखम्, गोरक्षितम् इत्यादि भी इस सूत्र के उदाहरण होते हैं।

## (2.6) ''पञ्चमी भयेन''

**सूत्रार्थ**–पञ्चम्यनत सुबन्त को भय प्रकृति के द्वारा सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

**सूत्र व्याख्या**–यह विधायक सूत्र है। इस सूत्र से पञ्चमीतत्पुरुष समास होता है। यह द्वयात्मक सूत्र है। यहाँ पञ्चमी इस प्रथमा एकवचनान्त तथा **भयेन** यह तृतीया एक वचनान्त पद हैं। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''तत्पुरुषः'' ''विभाषा'' ये तीन अधिकृत सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवल्स्वरे'' इस पद से सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। सुप् इसका तदन्त विधि में सुबन्तम् होता है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः'' इस परिभाषा से तदन्त विधि में पञ्चमी इसके द्वारा पञ्चम्बत्त सुबन्त को ग्राह्य करना चाहिए। भयशब्द के सुबन्तत्व के अभाव से भय प्राकृतिक लक्षणा है। एवं ''पञ्चम्यन्त सुबन्त को भयप्रकृतिक सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। यही सूत्रार्थ है।

यहाँ पञ्चम्यन्त के सञ् अर्थ से सुबन्त के साथ समास होता है। और वह तत्पुरुषसमास है। अतः यह समास पञ्चमी तत्पुरुष कहा जाता है।

**उदाहरण**–इस सूत्र का उदाहरण है चोरभयम्। चोराद् भयम् इस लौकिक विग्रह में चोर ङसि त्रय सु इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से भय प्रकृतिक द्वारा सुबन्त से त्रय सु इसके साथ चोर ङसि इस पञ्चम्यन्त सुबन्त को तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद पञ्चम्यन्त का पूवनियात होने पर चोर ङसि भय सु ऐसा होने पर प्रातिपदिकत्व से सुलोप होने पर निष्पन्न चोर भयशब्द से सु प्रत्यये की प्रक्रियाकार्य में यह रूप निष्पन्न होता है।

### पाठगत प्रश्न-3

17. ''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'' इस सूत्र का अर्थ क्या हैं?

18. ''तदर्थखण्ड से किसका ग्रहण होता है।

19. ''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'' इस सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये।

20. ''अर्थेज नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है।

21. ''पञ्चमी भयेन'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

22. ''पञ्चमी भयेन'' इस सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये।

## ( 2.6 ) ''स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि वतेन'' ( 2.9.37 )

**सूत्रार्थ**–स्तोक, अन्तिक, दूर अर्थ वाची और कृच्छशब्द पञ्चम्यन्त को सुबन्त को वत्तान्त प्रकृति सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

**सूत्र व्याख्या**– यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से पञ्चमीतत्पुरुषसमास होता है। यह सूत्र का पदद्वयात्मक है। यहाँ रतोकान्तिदूरार्थकृच्छ्राणि यह प्रथमाबहुवचनान्त तथा वतेन तृतीया एकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''तत्पुरुषः'', ''विभाषा'' ये तीनों सूत्र अधिकृत हें।'' सुबामकिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति हुई है। सुप् का तदन्तविधि में सुबन्तम् होता है। ''पञ्चमी भयेन'' इस सूत्र से अनुवृत्ति का पञ्चमी का ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः'' इस परिभाषा से तदन्त विधि में पञ्चम्यन्त सुबन्त यही अर्थ है। स्तोकान्तिक इराणि अर्था येवां ते रत्तोकान्तिकइरार्थाः यही बहुब्रीहि समास है और रत्तोकान्तिक दूरार्थाः कृञ्च्छ्रञ्च स्तोकान्तिकइरार्थकृच्छ्राणि यही इतरेतरयोगद्वन्द है। वत्तेन इस अर्थ का तदन्त विधि में तत्प्रकृतिक लक्षणा से क्तान्तप्रकृतिक यही अर्थ है। और सूत्रार्थ आता है ''स्तोकान्तिदूरार्थवाची कृच्छ्रशब्द और पञ्चम्यन्त सुबन्त को क्तान्त प्रकृतिक सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

**उदाहरण**–इस सूत्र का अर्थ है **स्तोकान्मुक्तः**। इसी प्रकार अल्पान्युक्तः, अन्तिकादागतः इरात् आगतः (दूरादागतः) कृछ्रादागतः इत्यादि अन्य सूत्र के उदाहरण है। स्तोकान्मुक्तः यहाँ स्तोकान्मुक्तः इस लौकिकविग्रह में स्तोक ङसि मुक्त सु इस अलौकिक विग्रह में स्तोकङसि इस पञ्चम्यन्त सुबन्त को मुक्त सु इस क्तान्त प्रकृतिक द्वारा सुबन्त के साथ प्रकृतसूत्र द्वारा तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। इसके बाद प्रथमा विभक्ति के निर्दिष्टता से उसके बोध्य का स्तोक ङसि इसका ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र से पूर्व निपात होता है। इसके बाद स्तोक ङसि मुक्त सु समास की प्रातिपदिक संज्ञा में ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् का ङसि प्रत्यये और सु प्रत्यय का लोप होने पर पञ्चमी का अलुक् विधायक सूत्र प्रवृत्त हुई है।

## ( 2.7 ) ''पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः'' ( 6.3.2 )

**सूत्रार्थ**–रतोकान्तिक इरार्थवाचकों से और कृच्छ्र शब्द से विहित पञ्चमी के उत्तरपद पर में लोप नहीं होता है।

टिप्पणियाँ



**सूत्र व्याख्या**–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से अलुक् होता है। अलुक् नाम यानि लुक् नहीं होता है। यह सूत्र द्वि पदात्मक है। यहाँ पञ्चमी के षष्ठी एकवचनान्त को स्तोक आदि से पञ्चमी बहुवचनान्त पद है। ''अलुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से अलुक् उत्तर पदे इन दोनों पदों की अनुवृत्ति होती है। स्तोक आदि शब्द से पूर्व सूत्र द्वारा उक्त (स्तोकान्तिक दूरार्थकृच्छ्राणां) स्तोक, अन्तिक, इरार्थ, कृच्छ आदि का ग्रहण किया गया है। और सूत्रार्थ आता है ''स्तोक, अन्तिक, इरअर्थवाची कृच्छ्र शब्द से विहित जो पञ्चमी उसका उत्तरपद पर में लोप नहीं होती है।''

**उदाहरण**–स्तोकान्मुक्तः यहाँ उदाहरण है। स्तोक ङसि मुक्त सु समास का प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपोधाकप्रातिकयोः'' इससे सुप् का ङसि और सु प्रत्यय प्राप्त होता है। तब प्रस्तुत सूत्र से पञ्चमी के ङसि प्रत्यये का अलुक् होता है। और सु प्रत्यय का ''सुपोधातुप्रातिपदिकपोः'' इस सूत्र से लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर स्तोकान्मुक्त शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सौ प्रक्रियाकार्ये होने पर ''स्तोकान्मुक्तः'' रूप होता है।

## ( 2.10. ) ''षष्ठी''

**सूत्रार्थ**–षष्ठयन्त सुबन्त को समर्थ से सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास संज्ञा वाला होता है।

**सूत्र व्याख्या**–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुष समास होता है। यह सूत्र एकपदात्मक (एक पद वाला) है। वह षष्ठी पद प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है। ''समर्थपदविधिः'', ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष'', ''विभाषा'' ये पूर्व से अधिकृत हैं। ''प्रत्यय ग्रहणे-तदन्ता ग्राह्याः'' इस परिभाषा से इससे षष्ठयन्त सुबन्त प्राप्त होता है। और षष्ठयन्त सुबन्त को सम अर्थ होने से सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। यही सूत्रार्थ आता है।

यहाँ षष्ठयन्त को समान अर्थ से सुबन्त के साथ समास होता है। और वह तत्पुरुषसमास होता है। अतः यह समास षष्ठी तत्पुरुष कहा जाता है।

**उदाहरण**–इस सूत्र का उदाहरण है राजपुरुषः। राज्ञः पुरुष उस लौकिक विग्रह में राजन् ङस् पुरुष सु इस अलौकिक विग्रह में राजन् ङस् इस षष्ठयन्त सुबन्त पुरुष सु इस समान अर्थ से सुबन्त के साथ प्रकृत सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद षष्ठयन्त का राजन् ङस् इसके उपसर्जनत्व से पूर्व निपात होने पर राजन् ङस् पुरुष सु होता है। समुदाय की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपोधातुप्रातिपदिकमे'' इससे सुप् का ङस् और सु प्रत्यय का लोप होने पर राजन् पुरुष होता है। तब ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' इस सूत्र से राजन् शब्द का नकार का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न होने से राजपुरुष शब्द से सु प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में राजपुरुष रूप होता है।

## पाठगत प्रश्न-4

23. ''रत्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

24. ''रत्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन'' इस सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये।

25. ''स्तोकान्मुक्त: इत्यादि में पञ्चमीविभक्ति का अलुक कैसे होता है?

26. ''पञ्चम्या: स्तोकादिभ्य:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

27. ''षष्ठी'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

28. ''षष्ठी'' सूत्र का विग्रह सहित एक उदाहरण दीजिये।

प्रसङ्गत: षष्ठीतत्पुरुष निषेध सूत्रों का वर्णन किया जा रहा है।

## (2.11) ''न निर्धारणे'' (2.2.90)

**सूत्रार्थ**–निर्धारण में षष्ठयन्त को सुबन्त के साथ समास नहीं होता है।

**सूत्र व्याख्या**–पाणिनीय सूत्रों में यह विधि है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुषसमास निषेध किया गया है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। इस सूत्र में ''निर्धारणे'' सप्तम्यन्त पद है। निषेध बोधक अन्ययपद नहीं है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये अधिकृत हैं। ''षष्ठी'' सूत्र से षष्ठीपद की अनुवृत्ति होती है। निर्धारण में विधीयमान जो षष्ठी उस षष्ठयन्त सुबन्त का सुबन्त के साथ ''षष्ठी'' इससे षष्ठी तत्पुरुष समास प्राप्त होता है। वह समास इससे निषेध किया गया है। अत: सूत्र का अर्थ होता है–निधारण कार्य में जो षष्ठी तदन्त को सुबन्त को समास नहीं होता है।

निर्धारण नाम जातिगुण किया संज्ञाओं से एकदेश समुदाय का पृथक्करण है। जैसे:–नृणां द्विज: (आदमियों में ब्राह्मण) श्रेष्ठ है। यहाँ ''यतश्च निर्धारणम्'' इससे नृणाम् यहाँ पर निर्धारण में षष्ठी विहित होती है। यहाँ नृसमुदाय से श्रेष्ठत्व धर्म से द्विज का (ब्राह्मण का) पृथक्करण हुआ। जिससे पृथक्करण हुआ है वहाँ षष्ठी होती है।

**उदाहरण**–इस सूत्र का उदाहरण है जैसे आदमियों में ब्राह्मण श्रेष्ठ होता है। (नृणां द्विज: श्रेष्ठ:) ''यतश्च निर्धारणम्'' इससे नृणाम् यहाँ पर निर्धारण में षष्ठी विहित है। इसके बाद षष्ठी इस सूत्र से नृणाम् इस षष्ठयन्त सुबन्त का द्विज: इय सुबन्त से समास प्राप्त होने पर प्रकृत सूत्र से निर्धारणषष्ठयन्त से नृणाम् इस पद का उस से साथ समास निषेध होता है।

## (2.11.1) प्रतिपद विधाना षष्ठी न समस्यते (वार्तिकम्)

**वातिकार्थ**–प्रतिपदविधान जो षष्ठी अन्त वाले पद को सुबन्त के साथ समास नहीं होता है।

टिप्पणियाँ



**वार्तिक व्याख्या**–यह वार्तिक षष्ठी समास निषेध प्रसंङ्ग में विराजता है। इस वार्तिक से षष्ठीतत्पुरुषसमास का निषेध होता है। यह वार्तिक चार यह वाला है। यहाँ प्रतिपदविधाना षष्ठी ये दो पद वाला प्रथमा एकवचनान्त है। यह निषेध बोधक अव्यय नहीं है। समास होता है क्रियापद है। पदं पदं प्रति इस प्रतिपदम् इस वीप्सा में अव्ययीभाव है। ''षष्ठी शेषे'' इस शेष लक्षणा षष्ठी को वर्जित करके सभी भी षष्ठी प्रतिपदबिछाना महाभाव्य से ग्रंथ से जाना जाता है। और प्रतिपद विधानषष्ठयन्त के षष्ठी इससे समास प्राप्त होने पर उक्त वार्तिक से उसका निषेध होता है।

**उदाहरण**–वार्तिक का उदाहरण है सर्पिषः ज्ञानम्। सर्पिषः यहाँ पर ''ज्ञोऽविदर्थस्थ करणे'' इससे षष्ठी विहित है। और वह षष्ठी प्रतिपदविधाना षष्ठी होती है। अतः सपिषः इस षष्ठयन्त का सुबन्त का ज्ञान इससे सुबन्त के साथ ''षष्ठी'' इस सूत्र से समास प्राप्त होने पर सपिषः का प्रतिपदविधानषष्ठयन्त होने से प्रोक्त वार्तिक से समास निषेध होता है।

## पाठगत प्रश्न-5

29. ''न निर्धारणे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

30. नृणां द्विजः श्रेष्ठः यहाँ पर षष्ठी समास क्यों नहीं हुआ?

31. निर्धारण क्या है?

32. ''प्रतिपदविधाना षष्ठी न समस्यते'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

33. प्रतिपदविधाना षष्ठी क्या है?

34. सर्पिषोज्ञानम् यहाँ समास कैसे नहीं हुआ?

## ( 2.12 ) ''पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्य समानाधिकरणेन''

**सूत्रार्थ**–पूरण आदि अर्थों से और सदादि से षष्ठयन्त सुबन्त को समास संज्ञा नहीं होती है (समास नहीं होती है)

**सूत्र व्याख्या**–छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से षष्ठी तत्पुरुष समास निषेध होता है। यह एकपदात्मक सूत्र हैं। यहाँ ''पूरणगुणसुहितार्थ सदव्ययतव्य-समानाधि करणेन यह तृतीया एक वचनान्त पद है। पूरणश्च, गुणश्च, सहितं च पूरणगुणसुहितानि यहाँ इतरेतरयोगद्वन्दसमास है। तानि अर्था येषां ते पूरणगुणसुहितार्थाः यह बहुव्रीहिसमास है। पूरणगुणसुहितार्थाश्च सच्च अव्ययं च तव्यश्च समानाधिकरणञ्च इति पूरणगुणसुहितार्थसदव्यय समानाधिकरणम्, पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययसमानाधिकरणेन यहाँ समाहारद्वन्द है।

पूरणार्थशब्द से पुरणार्थक प्रत्ययों के शब्दों का ग्रहण है। गुणार्थशब्द से प्रधानत्व और उपसर्जनत्व गुणवाची जो शब्द है उसका ग्रहण किया गया। सुहितार्थ का नाम तृप्त्यर्थक है। ''**सत**'' इस पद से ''तौसत्'' सूत्र से सत्संज्ञक जो दोनों शतृशानच् प्रत्ययों को तदन्त का बोध

होता है। यहाँ अव्ययपद से सन्तव्य इस पूर्व और उत्तर के साहचर्य से कृदन्त क्त्वा, तोसुन्, सुन्नन्त प्रत्ययों का ग्रहण किया गया है। उनमें क्त्वा, तोसुन्, कसुन इस अव्यय संज्ञा विधान से। उससे उसके ऊपर उसके ऊपर इत्यादि में समास दुर्वार है। तव्य का प्रत्यय से तदन्त का बोध होता है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये अधिकृत किये गये हैं। ''षष्ठी'' इससे षष्ठी पद को ''न निर्धारणे'' इससे पद की अनुवृत्ति नहीं होती है। इस सूत्र का अर्थ होता है–षष्ठयन्त सुबन्त को पूरण आदि अर्थों से सदादि से समास नहीं होता है। अर्थात् ''पूरण आदि अर्थों से और सदादि से षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

**उदाहरण**–इस सूत्र का उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

पूरण अर्थ से निषेध होने पर उदाहरण है–सतां षष्ठ:। षष्णां पूरण: इस अर्थ में ''तस्य पूरणे डट्'' इससे डट् प्रत्यय होने पर ''षट्कतिकतिपयचतुरां थुक्'' इससे थुक् प्रत्यय होने पर षष्ठ: रूप होता है। यहाँ **सताम्** षष्ठयन्त का पूरणार्थक षष्ठ शब्द से ''षष्ठी'' इससे षष्ठी समास होने पर उसका निषेध प्रकृत सूत्र से होता है।

गुण से निषेध होने पर काकस्य काष्ण्यम् यह उदाहरण है। कृष्णशब्द से भाव में ष्यञ् प्रत्यय होने पर काष्ण्य: शण्ड निष्पन्न होता है। अत: काष्ण्यम् इसके गुणवाची होने के कारण उसके साथ काकस्य इस षष्ठयन्त का ''षष्ठी'' इस षष्ठी समास होने पर वह प्रकृतसूत्र से निषेध होता है। गुण से जो निषेध विहित है वह अनित्य है। ''तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात्'' इस सूत्र में संज्ञा के गुणभूतप्रमाणिता खण्ड के साथ समास दर्शन से होता है। निषेध के अनित्यत्व अर्थस्य गौरवम् (अर्थ का गौरवम्)-अर्थगौरवम्। बुद्धे: मान्द्यम् (बुद्धि से मंदता) बुद्धिमान्धम् आदि में निषेध नहीं होता है।

सुहितार्थ से निषेध होने पर फलानां सुहित: इत्यादि एक उदाहरण है। यहाँ षष्ठयन्त फलशब्द का सुहित शब्द के साथ प्राप्त षष्ठी समास का प्रकृतसूत्र से निषेध होता है।

सदन्त से निषेध होने पर द्विजस्य कुर्वन् कुर्वाणो वा इसका उदाहरण है। कृ धातु से शतृप्रत्यय और शानच् प्रत्यय होने पर क्रमके अनुसार कुर्वन् और कुर्वाण: ये दो रूप हैं। यहाँ षष्ठयन्त का द्विजशब्द का कुर्वन् इससे कुर्वाण: इस योग में प्राप्त हुआ इससे षष्ठी समास का निषेध होता है।

अव्यय के निषेध होने पर ब्राह्मणस्य कृत्वा इत्यादि यहाँ उदाहरण है। **कृत्वा** से अव्ययसंज्ञक होने से ब्राह्मणस्य यह षष्ठ्यन्त से प्राप्त हुआ षष्ठी समास इससे निषेध होता है।

तल्यप्रत्ययात्त से निषेध होने पर ब्राह्मणस्य कर्न्तव्यम् इसका यहाँ उदाहरण है। कृ धातु से ''तव्यतव्यानीयर:'' इससे तव्यत् प्रत्यय होने पर कर्त्तव्यम् रूप होता है। षष्ठयन्त ब्राह्मण का सुबन्त का तल्य प्रत्ययान्त से कर्न्तव्यम् इससे प्राप्त षष्ठी समास का इससे निषेध होता है। तत्थत्प्रत्ययान्त के योग होने पर तो समास होता ही है। स्वस्थ कर्त्तव्यम् इस विग्रह में स्वकर्त्तव्यम् में षष्ठी समास होता है। तव्यति कृते कृत् उत्तर पद प्रकृति स्वर से प्रकृति स्वर, तव्यत् में तो फलभेद नहीं होता है।

समानाधिकरण से निषेध होने पर तक्षकस्य सर्पस्य इति आदि उदाहरण है। यहाँ तक्षकस्य इस

टिप्पणियाँ



षष्ठयन्त का सुबन्त का षष्ठयन्त से सर्पस्य इस सुबन्त से प्राप्त षष्ठी समास समानाधिकरण से प्रकृत सूजेण से निषेध होता है। यहाँ ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इससे प्राप्त कर्मधारय बहुलग्रहणसामर्थ्य से नहीं होता है।

## पाठगत प्रश्न-6

35. ''पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन'' इस सूत्र का क्या अर्थ हैं?

37. गुण शब्द से षष्ठीसमास निषेध अनित्य कैसे होता है?

38. पूरण अर्थ से षष्ठी समास निषेध होने का उदाहरण कौन सा है?

39. सदन्त से षष्ठी समास निषेध होने का क्या उदाहरण है?

39. अव्यय से षष्ठी समास निषेध होने का कौन सा उदाहरण है?

40. स्वकर्त्तव्यम् यहाँ समास क्यों हुआ?

## ( 2.13 ) ''क्तेन च पूजायाम्''

**सूत्रार्थ**–''मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च'' इससे विहित जो क्त प्रत्यय है, उसस से षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

**सूत्र व्याख्या**–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुषसमास का निषेध होता है। यह सूत्र तीन पदवाला है। सूत्र में ''क्तेन'' यह तृतीया एकवचनान्त पद है। और अव्यय पद है। 'पूजायाम्'' यह पद सप्तम्येकवचनान्त है। यहाँ पर ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''षष्ठी'' इससे षष्ठी पद ''न निर्धारणे'' इससे पद की अनुवृत्ति नहीं आती है। यहाँ पूजा अर्थ में क्तप्रत्यय होने पर षष्ठी समास नहीं होता है। पूजाग्रहण मतिबुद्धिपूजार्थश्च यह सूत्र का उपलक्षण है। सूत्रार्थ होता है– ''मतिबुद्धिपूजार्थो से विहित जो क्त प्रत्यय, उससे षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

**उदाहरण**–इस सूत्र का उदाहरण है राज्ञां यतः। यतः यहाँ ''मतिबुद्धिपूजार्थेव्यश्च इससे वर्तमान में क्त प्रत्यय होता है। अतः वर्तमान अर्थक क्त प्रत्यय के योग में ''क्तस्य च वर्तमाने'' इससे राजन् शब्द से षष्ठी विभक्ति में राज्ञाम् रूप बना। यहाँ षष्ठयन्त रूप राज्ञाम् का सुबन्त के मतः सुबन्त के साथ प्राप्त षष्ठी समास प्रकृतसूत्र से निषेध होता है। राताम् इष्यमाण यही अर्थ होता है। इसी प्रकार राज्ञां बुद्धः, राज्ञां पूजितः इत्यादि में समास नहीं होता है।

**प्रश्न**–राजमतः, राजबुद्धः, राजपूजितः, इत्यादि में समास क्यों होता है। राजाभिः पूजितः इस विग्रह में भूत क्तान्त प्रत्ययान्त के साथ तृतीयान्त का समास होता है। तृतीयासमास होने से यहाँ यह सूत्र बाँधा गया है।

## ( 2.14 ) ''अधिकरणवाचिना च'' ( 2.2.13 )

**सूत्रार्थ**–अधिकरणवाची जो क्त प्रत्यय है, उससे षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

**सूत्र व्याख्या**–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुषसमास निषेध कहा गया है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। यहाँ अधिकरणवाची से तृतीयावचनान्त पद है। और यह अव्यय पद है। यहाँ पर ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीनों सूत्र अधिकृत हैं। ''षष्ठी'' इससे षष्ठी इस पद को ''न निर्धारणे'' की अनुवृत्ति होती है (निषेध) ''क्तेन च पूजायाम्'' इससे क्तेन पद की अनुवृत्ति हो आती है। और सूत्र का अर्थ होता है ''अधिकरणवाची जो क्त प्रत्यय, उससे षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

**उदाहरण**–इस सूत्र का उदाहरण है- ''इदमेषामासितम्'' इत्यादि है। ''आसितम्'' यहाँ पर ''क्तोऽचिकरणे च ध्रौव्यगति प्रत्यवसानार्थेभ्य:'' इससे अधिकरण में क्त प्रत्यय होता है। यहाँ ''अधिकरणवाचिनश्च'' इससे अधिकरणवाची क्तप्रत्यय के योग में ''एषाम्'' में षष्ठी विभक्ति हुई। यहाँ एषाम् षष्ठपद का आसितम् इस क्तप्रत्ययान्तपद के योग होने पर षष्ठीसमास प्रस्तुत सूत्र से निषेध किया गया है।

## ( 2.15 ) ''कर्माणि च'' ( 2.2.18 )

**सूत्रार्थ**–''उभयप्राप्तोंकर्मणि'' उससे विहित जो षष्ठी उसके सुबन्त का सुबन्त के साथ मास नहीं होता है।

**सूत्र व्याख्या**–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से षष्ठी तत्पुरुष समास का निषेध हुआ है। यह सूत्र द्वि पदात्मक है। यहाँ पर **'कर्मणि'** सप्तम्येकवचनान्त पद है। और अव्यय पद है। यहाँ पर ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीनों सूत्र अधिकृत सूत्र है। ''षष्ठी'' इस षष्ठी पद को ''न निर्धारणे'' इससे 'न' इस पद की अनुवृत्ति होती है। और इसका यही पर्याय है। अत: कर्मणि इस पद में सप्तमी एकवचन का उच्चारण करके जो षष्ठी उसका सुबन्त के साथ समास नहीं होता है। यही सूत्रार्थ प्रतीत होता है। और सूत्रार्थ होता है ''उभयप्राप्तौ कर्मणि'' इससे निहित जो षष्ठी तदन्त सुबन्त का सुबन्त के साथ समास नहीं होता है।

**उदाहरण**–इस सूत्र का उदाहरण है तावत् आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन इत्यादि गवाम् इस पद पर कर्त्ता और कर्म में षष्ठी प्राप्त होने पर ''उभय प्राप्तौकर्मणि'' इससे कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। अत: गवाम् इस षष्ठन्त दोह: शब्द को सुबन्त के साथ प्राप्त षष्ठी समास का प्रस्तुत सूत्र से निषेध होता है।

### पाठगत प्रश्न-7

41. ''क्तेन च पूजायाम्'' इस सूत्र क्या अर्थ है?

42. सूत्र में पूजाग्रहण का क्या अर्थ है?

टिप्पणियाँ



43. ''क्तेन च पूजायाम्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये।

44. ''अधिकरणवाचिनाच'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

45. ''अधिकरणवाचिना'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये।

46. ''कर्मणि च'' इस सूत्र का क्या अर्थ हैं।

47. ''कर्मणि च'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये।

## ( 2.16 ) ''तृजकाभ्यांकर्तरि'' ( 2.2.15 )

**सूत्रार्थ**–कर्तृ अर्थक दो तृजक प्रत्यय तदन्त सुबन्त के साथ षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

**सूत्र व्याख्या**–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुषसमास का निषेध होता है। यह सूत्र द्वि पदात्मक है। यहाँ तृजकाभ्याम् इस तृतीयाद्विवचनान्त कर्न्तरि सप्तमी एकवचनान्त पद है। यहाँ कर्तरि इस नृजक प्रव्ययों में ही विशेषण है, तथा अनुवृत्ती षष्ठी में नहीं होती है। तृच् प्रत्ययान्त और ण्वुल् प्रत्ययान्त तृजक अंश से स्वीकार किया गया है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''षष्ठी'' इससे षष्ठी इस पद को ''न निर्धारणे'' इससे ''न'' पद की अनुवृत्ति हुई है। और सूत्र का अर्थ है कर्त्रर्थक जो दो तृजक प्रत्यय को तदन्त सुबन्त के साथ षष्ठयन्त्र सुबन्त का समास नहीं होता है।

**उदाहरण**–इस सूत्र का तृजक से निषेध होने पर ''तावत् अपां स्रष्टा'' इत्यादि उदाहरण बना। सृज् धातु ये ''वुल्तृचौ'' इससे तृच् स्रष्टा रूप बना स्रष्टा इसके योग से षष्ठयन्त अयाम् का प्राप्त षष्ठीसमास प्रस्तुत सूत्र से निषेध होता है।

और ण्वुल् प्रत्ययान्त का निषेध होने पर ओदनस्थ पाचकः इत्यादि उदाहरण है। यहाँ पच् धातु का ''ण्वुल्वृचौ'' इससे कर्ता में ण्वुल् प्रत्यये होने पर अकादेश होने पर पाचकः रूप बना पाचकः इससे योग होने पर ओदन का षष्ठयन्त को प्राप्त होने पर षष्ठी समास प्रस्तुत सूत्र से निषेध होता है।

## ( 2.17 ) ''कर्त्तरि च''

**सूत्रार्थ**–कर्ता में जो षष्ठी तदन्त का ण्वुल्प्रत्यय के साथ प्रत्यय नहीं होता है।

**सूत्र व्याख्या**–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुषसमास का निषेध होता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। यहाँ कर्तरि पद सप्तम्यन्त वचनात है। और यही अव्ययीपद है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समासः'', 'सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''षष्ठी'' इससे षष्ठी इस पद को ''न निर्धारणे'' इससे ''न'' पद की अनुवृत्ति होती है। ''नृजकम्भ्यां कर्तरि'' इससे अकेन इस अंश की अनुवृत्ति होती है। उसका ण्वुल्प्रत्यान्त से यही अर्थ है। यहाँ पर कर्त्तरि इस

पद को षष्ठी इस अनुवृन्त पद के साथ अन्वय होता है। एवं सूत्रार्थ होता है–''कर्ता में जो षष्ठी तदन्त का सुबन्न के ण्वुल् प्रत्ययान्त के साथ समास नहीं होता है।''

**उदाहरण**–भवत: शायिका इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। सी धातु से ण्वुल्, अनादेश में टाप् प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में शायिका रूप बना। उससे योग में ''कर्तृकर्मणो: कृति'' इस सूत्र से भवत: इस पद में कर्ता में षष्ठी विभक्ति होती है। यहाँ अक का कर्त्रर्थकत्व के अभाव से ''तृजकाम्यां कर्तरि'' यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है। इसके के अवत: पद से षष्ठयन्त से शायिका इस ण्वुल्प्रत्ययान्त का षष्ठी तत्पुरुष समास होने पर प्रस्तुत सूत्र से भवत: यहाँ षष्ठी का कर्तरि पद के विधान से षष्ठी समास का निषेध होता है।

## ( 2.17 ) ''पूर्वापरधरोत्तरमेकदेशनेकाधिकरणे'' ( 2.2.9 )

**सूत्रार्थ**– जब अव्ययी एकत्व विशिष्ट हो तब अव्यय के साथ पूर्व आदि सुबन्त का विकल्प से तत्पुरुष समास होता है।

**सूत्र व्याख्या**–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। ''षष्ठी'' इससे प्राप्त समास का अपवादभूत है। यह सूत्र त्रिपदात्मक है। यहाँ पूर्वापरधरोत्तरम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। एकदेशिना इस तृतीया एकवचनान्त और एक अधिकरण में सप्तमी एकवचनान्त पद है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'', ''विभाषा'' ये अधिकृत हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप् की अनुवृत्ति होती है। पूर्वापरधरोत्तर इस विशेषण से सुप् का तदन्तविधि में पूर्वापराधरोत्तर को सुबन्त होता है। पूर्वञ्च परञ्च अधरञ्च उत्तरञ्च इस विग्रह में समाहार द्वन्द में पूर्वापराधरोत्तरम्'' यह पद है। एकेदेशिना नाम अवयविना हैं। एकं च तदधि करणं च एकाधिकरणम्, उस एकाधिकरणे पद में कर्मधारय समास होता है। एकं नाम एकत्वसंख्याविशिष्ट से है। अधिकरण शब्द द्रव्य परक है। एकाधिकरण में इसका सम्बन्ध एकदेश पद के साथ है। और सूत्रार्थ है: ''जब अवयवी एकत्वविशिष्ट पर हो तब अवयव के साथ पूर्व आदि सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है।

**उदाहरण**–सूत्र का उदाहरण है यथापूर्वकाय:। पूर्वं कायस्य इति लौकिक विग्रह में पूर्व सु काय ङस् इस अलौकिक विग्रह में ''षष्ठी'' से षष्ठीतत्पुरुषसमास होने पर उसको बाँधकर प्रकृतसूत्र से काय ङस् एकत्वसंख्याविशिष्ट से अवयव वाची सुबन्त के साथ पूर्व+सु इस सुबन्त प्रोक्त सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा होता है। इसके बाद सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने पर पूर्व+सु इश सुबन्त का उपसर्जन संज्ञा होने पर पूर्व नियात होने पर पूर्व सु काय ङस् होता है। इसके बाद सुष्ट का लोप होने पर निष्पन्न होने पर पूर्वकायशब्द से सुप्रत्यय होने पर पूर्वकाम: रूप होता है। अपरकाय:, अधरकाय: इत्यादि इस सूत्र के उदाहरण है।

### पाठगत प्रश्न-8

48. ''तृजकाभ्यांकर्त्तरि'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

टिप्पणियाँ



49. ''तृजकाभ्यांकर्त्तरि'' इस सूत्र का तृचा निषेध होने का उदाहरण है।

51. ''कर्त्तरि च'' यह सूत्र का क्या अर्थ है?

52. ''कर्त्तरि च'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

53. ''पूर्वापराधरोत्तरमेकडोरीबैकाधिकरणे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

54. ''पूर्वापरापरोन्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

## ( 2.19 ) ''अर्धं नपुंसकम्''

**सूत्रार्थ**–समांशवाची नित्य नपुंसकलिङ्ग में विद्यमान अर्थशब्द अवयव के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है, एकत्व संख्या विशिष्ट अवयवीपद है।

**सूत्र व्याख्या**–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। ''षष्ठी'' इससे प्राप्त समास का अपवादभूत यह सूत्र है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। यहाँ ''अर्घ नपुंसकम्'' यह द्विपदात्मक है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष'', ''विभाषा'' ये तीनों अधिकृत सूत्र है। ''युवामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप् इस ''पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे'' इससे एकदेशिना एकाधिकरणे इन दोनों की अनुवृत्ति होती है। समांशवाची नित्यनपुंसकलिङ्गे विद्यमान का ही यहाँ अर्घशब्द का ग्रहण है। और सूत्रार्थ होता है–''सम् अंशवाची नित्यनपुंसकलिङ्ग में विद्यमान अर्घशब्द एकत्व संख्या-विशिष्ट-द्रव्यवाची का अवयव के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।''

**उदाहरण**–जैसे सूत्र का उदाहरण है अर्धपिप्पली। अर्धपिप्पल्याः इस लौकिक विग्रह में अर्धं सु पिप्पल्लीङस् इस अलौकिक विग्रह में ''षष्ठी'' इससे षष्ठीतत्पुरुष समास प्राप्त होने पर उसको बांधकर प्रकृत सूत्र से पिप्पलीङस् इस एकत्व संख्या विशिष्ट से अवयववाची सुबन्त के साथ अर्धसु इस सम् अंशवाची नित्य नपुंसकलिङ्ग होने पर विद्यमान तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद अर्ध सु इसका प्रथमानिर्दिष्टत्व उपसर्जन संज्ञा का पूर्व निपात होने पर सुप् लोप होने पर निष्पन्न अर्धपिप्पली इससे सु प्रत्यये अर्धपिप्पली रूप होता है।

## ( 2.20 ) ''सप्तमी शौण्डैः''

**सूत्रार्थ**–सप्तम्यन्त सुबन्त को शौण्ड आदि प्रकृतिक को सुबन्त के साथ तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

**सूत्र व्याख्या**–छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। यह द्विपदात्मक सूत्र हैं। यहाँ सप्तमी प्रथमैकवचनान्तं और शौण्डैः तृतीया बहुतचनान्त है। यहाँ ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'', ''विभाषा'' ये तीनों सूत्र अधिकृत है। ''सुथामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः इस परिभाषा से यहाँ सप्तमी तदन्तविधि में सप्तभ्यन्त सुबन्त प्राप्त

होता है। शौण्डशब्द में बहुवचन निर्देश और गदपाठ से शौण्डशब्द शौण्डादिगण में विद्यमान शौण्डादि बोधक है। शौण्डादि में उसका तत्प्रकृतिक में लक्षणा है। और सूत्र का अर्थ है–सप्तम्यन्त सुबन्त को शौण्डादि प्रकृतिक को सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

यहाँ सप्तम्यन्त समर्थ सुबन्त को समास होता है। और वह तत्पुरुष समास है। अतः यह समास सप्तमी तत्पुरुष समास कहा जाता है।

**उदाहरण**–इस सूत्र का उदाहरण है अक्षशौण्डः। अक्षेषु शौण्डः इस लौकिकविग्रह में अक्ष सुप शौण्ड सु इस अलौकिक विग्रह में अक्षसुप् इस सप्तम्यन्त सुबन्त को शौण्ड यु इससे शौण्डप्रकृतिक को सुबन्त के साथ प्रकृतसूत्र से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। इसके बाद समास विधायकशास्त्र में सप्तमी इसका प्रथमानिर्दित्व से उस बोध का अक्ष सुप् इसकी उपसर्जन संज्ञा होने पर पूर्वनिपात में अक्षसुप् शौण्ड सु इस प्रथमाएकवचन में सु प्रत्यय होने पर **अक्षशौण्डः** रूप बना।

## पाठगत प्रश्न-9

55. ''अर्धं नपुंसकम्'' यह सूत्र का अर्थ है?

56. ''अर्धं नपुंसकम्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

57. ''सप्तमी शौण्डैः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

58. ''सप्तमी शौण्डैः'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

**पाठसार** : समास भेदों में तृतीयतत्पुरुष समास इस पाठ में प्रतिपादित है। ''तत्पुरुषः'' यह अधिकृत करके यह समास प्रवृत होता है। यह समास प्राय उत्तरपदार्थप्रधान है। और इस समास को तत्पुरुषसमास समानाधिकरण और व्याधिकरण दो प्रकार से कह सकते हैं। यहाँ व्यधिरणतत्पुरुष विधायक सूत्रों को इस पाठ में सन्निवेश किया गया। व्याधिकरणे पदे इसका अर्थ असमानविभक्तिक पदे हैं। व्याधिकरणे अस्त स्तः (व्यधिकरण में है दोनों) व्याधिकरण इस अर्श आदित्व अच् प्रत्यय है। और जिसमें तत्पुरुष समस्यमान पद समानविभक्ति नहीं है वह है व्यधिकरण तत्पुरुषः। विशेष प्रयोजन साधन के लिए द्विगुसमास का ''द्विगुःच'' इससे तत्पुरुषसंज्ञा यहां वर्णित है। व्यधिकरणतत्पुरुष पुनः द्वितीयातत्पुरुष, तृतीयातत्पुरुष, चतुर्थीतत्पुरुष, पञ्चमीतत्पुरुष, षष्ठीतत्पुरुष और सप्तमीतत्पुरुष षङ प्रकार होता है। ''द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्त प्राप्तापन्नैः'', ''तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' और ''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' इसका तृतीयातत्पुरुष का ''चतुर्थीतदर्थार्थबलि हित सुखरक्षितैः'' इस चतुर्थी तत्पुरुष का ''पञ्चमीभंयेन'' इस और 'स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन'' इससे पञ्चमी तत्पुरुष का ''षष्ठी'' इस षष्ठी तत्पुरुष ''सप्तमीशौण्डैः'' सप्तमीतत्पुरुष विधायक सूत्रों की व्याख्या की गई है। पञ्चमी समास के अवसर पर ''पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः'' इस पञ्चमी से अलुक् विधायक सूत्र की व्याख्या की गई है। ''पूर्वापशधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे'', ''अर्धनपुंसकम्'' इस षष्ठी समास का अपवादभूत

समास विधायक दो सूत्रों की व्याख्या की गई है। और वहाँ ''अर्थेन नित्यसमासो विशेल्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्'' इस वार्तिक की व्याख्या की गई। षष्ठी समास निषेधक ''न निर्धारणे'' ''पूरणगुणसुहितार्थसदग्ययलव्यसमानाधिकरणेन'', ''क्तेन च पूजायाम्'' ''अधिकरणवाचिना च'', ''कर्मणि च'', ''तृजकाभ्यांकर्त्तरि'', ''कर्त्तरिच'' इन सात सूत्रों ''प्रतिपदविधान से षष्ठी समास नहीं होता है ''प्रतिपदविधाना षष्ठी न समस्यते'' वार्तिक की व्याख्या की गई है। और व्यधिकरण तत्पुरुष समास इस पाठ में प्रतिपादित है।

## पाठांत प्रश्न

1. ''द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:'' इस सूत्र की व्याख्या करा हैं?
2. ''चतुर्थीतदर्थार्थ बलिहित सुखरक्षितै:'' इस सूत्र की व्याख्या करा है?
3. ''पूरागुणसुहितार्थसदव्ययतव्य समानाधिकरणेन।'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
4. ''पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे'' सूत्र की व्याख्या की गई है?
5. ''सप्तमी शौण्डै:'' सूत्र की व्याख्या करो?
6. कृष्णश्रित: रूप को सिद्ध करो?
7. सूपदारु रूप को सिद्ध करो?
8. अर्धपिप्पली रूप को सिद्ध करो?
9. अक्षशौण्ड: रूपं को सिद्ध करो?
10. षष्ठी समास निषेध सूत्र कौन से हैं? अर्थ और उदाहरण के साथ उनकी व्याख्या कीजिये?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

**उत्तर-1**

1. ''शेषो बहुव्रीहि:'' इस सूत्र तक।
2. द्विगु भी तत्पुरुष संज्ञक होता है।
3. समासान्त प्रत्यय विधान।
4. द्वितीया तत्पुरुष।
5. द्वितीयान्त सुबन्त को श्रितारिप्रकृतिकों द्वारा सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

6. इतरेतरयोगद्वन्द समास/श्रिरश्च अतीतश्च पतिश्च गतश्च अत्यस्तश्च प्राप्तश्च आपन्नश्च–श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नाः, तैः श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः यह विग्रह है।

7. श्रित आदि शब्दों के तत्प्रकृति क्या लक्षण है।

8. कृष्णं श्रितः इस विग्रह में कृष्णश्रितः उदाहरण है।

**उत्तर-2**

9. तृतीयान्त सुबन्त को तृतीयान्तार्थकृतगुणवचन और अर्थशब्द के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

10. तृतीयान्तार्थाकृत यही अर्थ है।

11. जो शब्द पूर्व गुणवाचक थे अब जो द्रव्यवाचक हैं वे ही गुणवाची शब्दों से ग्रहण किये जाते हैं।

12. शकुंलया खण्डः इति विग्रह में शङ्कुलाखण्डः।

13. कर्त्ता में और करण में विद्यमान तृतीयान्त सुबन्त को कृदन्त के साथ बहुल तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

14. दात्रेण लूनवान् इत्यादि में समास नहीं होता है।

15. कृदन्त के ग्रहण में गतिपूर्व कारक का भी कृदन्त का ग्रहण होता है। यही परिभाषा अर्थ है।

16. हरिणा त्रातः इति हरिजातः (हरि से त्रस्त)

**उत्तर-3**

17. चतुर्थी अन्त वाले अर्थ के लिए जो उसवाची अर्थबलिहितसुखरक्षितों के साथ चतुर्थ्यन्त सुबन्त को विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

18. प्रकृति विकृति का भाव का ग्रहण।

20. ''अर्थशब्द से चतुर्थ्यन्त नित्यसमास और समास में विशेष्यलिङ्गता होती है। यही वातिक का अर्थ है।

21. पञ्चम्यन्त सुबन्त को त्रयप्रकृतिक को सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। यही सूत्रार्थ है।

**उत्तर-4**

22. चोराद् भयम् इस विग्रह में चोरभयम् यह एक उदाहरण है।

टिप्पणियाँ



23. स्तोकान्तिकदूर अर्थ वाचि और कृच्छ्र प्रकृतिक पञ्चम्यत्त को क्तान्तप्रकृतिक सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

24. स्तोकात् मुक्तः इस विग्रह में समास में स्तोकान्मुक्तः एक उदाहरण है।

25. ''पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः'' इस सूत्र से।

26. स्तोक, अन्तिक, दूर अर्थवाची से कृच्छ्र शब्द से विहित पञ्चमी के उत्तरपद परे लोप नहीं होता है यही सूत्रार्थ है।

27. षष्ठयन्त सुबन्त को समर्थ से सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

28. राज्ञः पुरुषः इस विग्रह में राजपुरुषः है।

## उत्तर-5

29. निर्धारण में षष्ठयन्त सुबन्त को समास नहीं होता है।

30. ''न निर्वारणे'' इस सूत्र निषेध से यहाँ षष्ठी समास नहीं होता है।

31. प्रातिगुणक्रियासंज्ञाओं से समुदाय से एकदेश का पृथक्करण निर्धारण होता है।

32. प्रतिपदविधान षष्ठी तदन्त सुबन्त को समास नहीं होता है।

33. ''षष्ठीशेषे'' शेषलक्षणा षष्ठी को छोड़कर सभी षष्ठी प्रतिपदविधान। महाभाष्य में आद्याकर ग्रंथ से ज्ञात होता है।

34. प्रतिपदविधान षष्ठी का समास नहीं होता है षष्ठी समास निषेध से यहाँ से षष्ठी समास होता है।

## उत्तर-6

35. पूरण आदि अर्थों से और सदादि से षष्ठयन्त सुबन्त को समास संज्ञा नहीं होती है (समास नहीं होती है)

36. ''तदशिष्यं संज्ञा प्रमाणत्वात्'' इस सूत्र में संज्ञा के गुणभूतप्रमाणत्व शब्द के साथ समास दर्शन से।

37. षष्णां पूरणः ऐसा।

38. द्विजस्य कुर्वन् कुर्वाणो वा।

39. ब्राह्मणस्य कृत्वा

40. तव्यत् प्रत्यय के योग से समास होता है।

**उत्तर-7**

41. ''मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च'' इससे विहित जो क्त प्रत्यय है उसके अन्त से षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

42. पूजाग्रहणं मतिबुद्धिपूजार्थेभ्य: च यह सूत्र का उपलक्षण है।

43. राज्ञां मत:।

44. अधिकरणवाची जो क्त प्रत्यय, उस तदन्त षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

45. इदम् एषाम् आसीतम् इति।

46. ''उभयप्राप्तौ कर्मणि'' इससे विहित षष्ठी तदन्त सुबन्त का सुबन्त के साथ समास नहीं होता है।

47. आश्धर्यों गवां दोहो अगोपेन इति।

**उत्तर-8**

48. कर्तृ अर्थक जो तृजक दो प्रत्ययों को उस तदन्त सुबन्त के साथ षष्ठयन्त सुबन्त का समास नहीं होता है।

49. अपां स्रष्टा।

50. ओदनस्य पाचक: (ओदन का पाचक)

51. कर्त्ता में या षष्ठी तदन्त ण्वुल् प्रत्ययान्त के साथ समास नहीं होता है।

52. भवत: शायिका।

53. जब अवयवी एकत्वविशिष्ट तब अवयव के साथ पूर्वादि सुबन्तों को विकल्प से तत्पुरुष समास होता है।

54. पूर्वकाय:।

**उत्तर-9**

55. सम अंशवाची नित्य नपुंसक लिङ्ग में विद्यमान अर्धशब्द को अवयवन के साथ विकल्प से तत्पुरुष संज्ञा होती है, एकत्व संख्या विशिष्ट अवयवी पद है।

56. अर्ध पिप्पली।

57. सप्तम्यन्त सुबन्त शौण्डादिप्रकृति को सुबन्तों के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। यही सूत्रार्थ है।

58. अक्षशौण्ड:

**द्वितीय पाठ समाप्त**